

नैतिक जटिलता और अस्पष्टता समकालीन महिला साहित्य में नैतिक दुविधाओं को आकार देने में नायक की भूमिका

शाइनी जोस एस आर^{1*}, डॉ. राजीव कुमार ओझा²

1 शोधार्थी, सनराइज़ यूनिवर्सिटी, अलवर, राजस्थान, भारत

shinyjosesr76@gmail.com

2 प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग, सनराइज़ यूनिवर्सिटी, अलवर, राजस्थान, भारत

सार: समकालीन महिला साहित्य में नैतिक जटिलता और अस्पष्टता के विषय पर चर्चा करते हुए, यह अध्ययन यह समझने का प्रयास करता है कि महिला नायक नैतिक दुविधाओं को कैसे आकार देती हैं। नैतिक जटिलता और अस्पष्टता समाज के नैतिक ढांचे को चुनौती देती है और महिलाओं के अनुभवों को एक नए दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता पैदा करती है। समकालीन महिला साहित्य में नायिकाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है क्योंकि वे न केवल अपने व्यक्तिगत संघर्षों का सामना करती हैं बल्कि समाज की स्थापित नैतिक मान्यताओं के खिलाफ सवाल भी उठाती हैं। नायिकाओं की भूमिका इन दुविधाओं को उजागर करने में मदद करती है और उनके माध्यम से पाठकों को यह समझने का मौका मिलता है कि नैतिक निर्णयों के बीच की सीमाएँ अक्सर धुंधली और अस्पष्ट होती हैं। यह अध्ययन नायिकाओं के माध्यम से नैतिक दुविधाओं और जटिलताओं को उजागर करने का प्रयास करेगा और यह देखेगा कि समकालीन महिला साहित्य में इन दुविधाओं का चित्रण समाज में महिला पात्रों की भूमिका को कैसे पुनर्परिभाषित करता है। विश्लेषण महिला नायिकाओं के चरित्र, उनके संघर्षों और उनकी मानसिकता को समझने की कोशिश करेगा, साथ ही यह भी दिखाएगा कि ये नायिकाएँ सामाजिक और नैतिक दायित्वों के बीच संतुलन बनाने की कोशिश कैसे करती हैं।

मुख्य शब्द: नैतिक जटिलता, नैतिक दुविधा, समकालीन महिला साहित्य, नायक, सामाजिक संघर्ष, नैतिक अस्पष्टता, महिला साहित्य

प्रस्तावना

समकालीन महिला साहित्य में नैतिक जटिलता और अस्पष्टता का महत्वपूर्ण स्थान है। यह साहित्य न केवल महिलाओं के जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर करता है, बल्कि समाज की नैतिकता और सापेक्षता की गहरी परतों को भी उजागर करता है। नैतिक जटिलता का अर्थ है एक ऐसी स्थिति जहाँ कोई व्यक्ति या पात्र नैतिक निर्णय लेते समय कई विकल्पों के बीच उलझा रहता है, और कोई भी विकल्प पूरी तरह सही या गलत नहीं होता। यह स्थिति तब और जटिल हो जाती है जब वह निर्णय समाज में महिला पात्र के स्थान और उसके अधिकारों को प्रभावित करता है। समकालीन महिला साहित्य में नैतिक दुविधाएँ प्रमुख भूमिका निभाती हैं। ये दुविधाएँ व्यक्तिगत जीवन के पहलुओं तक ही सीमित नहीं हैं,

बल्कि ये समाज, संस्कृति और राजनीति से जुड़े सवाल भी उठाती हैं। महिलाएँ अक्सर अपने नैतिक निर्णयों के बीच फँसी रहती हैं, जहाँ एक ओर समाज की अपेक्षाएँ और परंपराएँ होती हैं, तो दूसरी ओर उनकी व्यक्तिगत इच्छाएँ और स्वतंत्रता। इस प्रकार, नैतिक दुविधाएँ महिलाओं के जीवन में आंतरिक संघर्ष का कारण बनती हैं और ये संघर्ष उनके निर्णयों को आकार देते हैं। इन दुविधाओं को आकार देने में नायक की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण होती है। नायक वे पात्र होते हैं जो अपनी ताकत, संघर्ष और इच्छाओं के ज़रिए कहानी को आगे बढ़ाते हैं। जब महिला नायक इस तरह के संघर्षों का सामना करती हैं, तो यह न केवल उनके निजी जीवन का सवाल होता है, बल्कि यह एक बड़े सामाजिक संदर्भ में भी महत्वपूर्ण हो जाता है। अपने निर्णयों और कार्यों के माध्यम से, महिला नायक दिखाती हैं कि नैतिकता एक स्थिर और अपरिवर्तनीय अवधारणा नहीं है।

यह व्यक्तिगत और सामाजिक संदर्भ के आधार पर बदलती रहती है। समकालीन महिला साहित्य में नायक की भूमिका से पता चलता है कि नैतिकता हमेशा स्पष्ट नहीं होती है और कभी-कभी उनके बीच की सीमाएँ अस्पष्ट होती हैं। जब महिला नायक सामाजिक, पारिवारिक और व्यक्तिगत संघर्षों का सामना करती हैं, तो उन्हें पता चलता है कि कोई भी निर्णय सही या गलत नहीं होता है। यहां चुनौती समाज की परंपराओं, अपेक्षाओं और अपने स्वयं के आंतरिक संघर्षों को समेटने की है। समाज के स्थापित नैतिक मानकों को चुनौती देने वाली महिला नायक हमेशा अपने फैसलों में स्पष्ट नहीं होती हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई महिला नायक अपने परिवार की खुशी के लिए अपनी स्वतंत्रता का त्याग करती है, तो क्या वह नैतिक रूप से सही है? या यदि वह अपने परिवार से अलग होकर अपनी इच्छाओं का पालन करती है, तो क्या वह समाज द्वारा लगाए गए नैतिक दबावों का उल्लंघन कर रही है? समकालीन महिला साहित्य में इस प्रकार की नैतिक दुविधाएँ बहुत आम हैं। समाज में स्थापित नैतिक मान्यताओं को चुनौती देने वाली महिला नायकों का चित्रण इस साहित्य का एक महत्वपूर्ण पहलू है।

इन नायकों के संघर्ष न केवल उनके व्यक्तिगत जीवन में बदलाव लाने की कोशिश करते हैं, बल्कि वे समाज में व्यापक बदलाव की ओर भी बढ़ते हैं। महिला नायकों के निर्णय और संघर्ष समाज के भीतर नए नैतिक दृष्टिकोण उत्पन्न करने का काम करते हैं। नैतिक जटिलता और अस्पष्टता का अध्ययन न केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से बल्कि समाज के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण है। यह दर्शाता है कि महिलाओं के जीवन में नैतिक निर्णयों के बीच की सीमा कभी स्पष्ट नहीं होती है और ये निर्णय हमेशा बाहरी दबावों, व्यक्तिगत इच्छाओं और सामाजिक जिम्मेदारियों के बीच संघर्ष करते हैं। समकालीन महिला साहित्य में महिला नायकों के माध्यम से इन जटिलताओं और अस्पष्टताओं को उजागर किया गया है, जिसका समाज में महिलाओं के स्थान, अधिकारों और भूमिका पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यह अध्ययन इस बात

पर विस्तार से प्रकाश डालने का प्रयास करेगा कि समकालीन महिला साहित्य में नायकों के माध्यम से नैतिक जटिलता और अस्पष्टता को कैसे चित्रित किया गया है और ये दुविधाएं महिलाओं के जीवन के विभिन्न पहलुओं को कैसे प्रभावित करती हैं। महिला नायकों के संघर्ष और उनके निर्णय न केवल व्यक्तिगत जीवन में बल्कि समाज में भी महिलाओं के लिए एक नई दृष्टि निर्मित करने का काम करते हैं।

अनुसंधान क्रियाविधि

"नैतिक जटिलता और अस्पष्टता: समकालीन महिला साहित्य में नैतिक दुविधाओं को आकार देने में नायक की भूमिका" पर इस अध्ययन के लिए शोध पद्धति साहित्यिक विश्लेषण का उपयोग करके गुणात्मक दृष्टिकोण अपनाएगी। अध्ययन 21वीं सदी में लिखे गए समकालीन महिला उपन्यासों और लघु कथाओं के उद्देश्यपूर्ण चयन पर ध्यान केंद्रित करेगा, जिसमें विविध सांस्कृतिक, सामाजिक और भौगोलिक संदर्भों पर जोर दिया जाएगा। विषयगत विश्लेषण के माध्यम से, चयनित ग्रंथों की नैतिक जटिलता और अस्पष्टता के लिए जांच की जाएगी, जिसमें इस बात पर विशेष ध्यान दिया जाएगा कि महिला नायक नैतिक दुविधाओं को कैसे नेविगेट और आकार देती हैं। नैतिक चुनौतियों को प्रस्तुत करने और हल करने में नायक की भूमिका को समझने के लिए चरित्र विकास, कथा संरचना और संघर्ष समाधान जैसे प्रमुख तत्वों का विश्लेषण किया जाएगा। विश्लेषण नारीवादी साहित्यिक सिद्धांत और नैतिकता द्वारा निर्देशित होगा, जिसमें स्वायत्तता, न्याय और देखभाल के सिद्धांत शामिल हैं। अध्ययन विश्लेषण का समर्थन करने और समकालीन महिला साहित्य में नैतिक अस्पष्टता की एक अच्छी समझ सुनिश्चित करने के लिए नारीवादी आलोचनात्मक निबंध जैसे माध्यमिक स्रोतों को भी एकीकृत करेगा।

परिणाम

इस शोध के परिणाम उन बहुआयामी तरीकों को प्रकट करते हैं, जिनसे महिला नायक समकालीन महिला साहित्य में नैतिक दुविधाओं को आकार देती हैं और उनसे निपटती हैं, तथा उनके द्वारा सामना की जाने वाली आंतरिक और बाह्य दोनों जटिलताओं पर जोर देती हैं। चयनित पाठ, जो विविध सांस्कृतिक और भौगोलिक पृष्ठभूमियों को शामिल करते हैं, नैतिक अस्पष्टता को दर्शाने में नायक की केंद्रीय भूमिका को लगातार प्रदर्शित करते हैं, जिससे पाठकों को नैतिक प्रतिबिंबों में शामिल किया जाता है, जो सही और गलत के सरलीकृत द्विआधारी से परे जाते हैं। यह अध्ययन इस बात की अंतर्दृष्टि प्रदान करता है कि समकालीन महिला लेखिकाएँ इन दुविधाओं का पता लगाने के लिए कथात्मक तकनीकों

और चरित्र विकास का उपयोग कैसे करती हैं, जिसमें नायक गहरे सामाजिक और नारीवादी मुद्दों की जाँच करने के लिए माध्यम के रूप में कार्य करते हैं।

नैतिक अस्पष्टता के अवतार के रूप में नायक

विश्लेषित साहित्य में नायक अक्सर नैतिक जटिलता और अस्पष्टता के अवतार के रूप में उभरते हैं। उनके कार्य, निर्णय और दुविधाएँ हमेशा स्पष्ट नहीं होती हैं, जो महिलाओं पर रखी गई सामाजिक अपेक्षाओं की एक बड़ी आलोचना को दर्शाती हैं। उदाहरण के लिए, कई मुख्य पात्रों को अपने लिंग आधारित भूमिकाओं से उत्पन्न नैतिक संघर्षों का सामना करना पड़ता है, जैसे कि परिवार, मातृत्व और करियर के आसपास के सामाजिक दबावों के साथ व्यक्तिगत स्वायत्तता को समेटना। इन नैतिक संघर्षों को कथाओं के भीतर आसानी से हल नहीं किया जाता है, जिससे पाठक को नायक की पसंद को जटिल और स्तरित के रूप में व्याख्या करने के लिए जगह मिलती है, बजाय सख्ती से नैतिक या अनैतिक के।

एक आवर्ती विषय स्वायत्तता और संबंधपरकता के बीच तनाव है। महिला नायक अक्सर ऐसी स्थितियों में रखी जाती हैं जहाँ उनकी व्यक्तिगत इच्छाएँ या ज़रूरतें दूसरों की माँगों या अपेक्षाओं के साथ टकराव में आ जाती हैं। यह उन परिदृश्यों में देखा जा सकता है जहाँ महिलाओं को अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों और अपने परिवारों या समुदायों के प्रति अपनी ज़िम्मेदारियों के बीच चयन करना होता है। यहाँ अस्पष्टता एक स्पष्ट "सही" उत्तर की अनुपस्थिति में है, जो इस व्यापक नारीवादी चिंता को दर्शाती है कि महिलाएँ व्यक्तिगत संबंधों के भीतर शक्ति की गतिशीलता को कैसे नेविगेट करती हैं।

उदाहरण के लिए, कई कथाओं में, नायक ऐसे विकल्प चुनने में संघर्ष करते हैं जो उनके आत्म-साक्षात्कार को प्राथमिकता देते हैं जबकि उनके निर्णयों का प्रियजनों पर पड़ने वाले प्रभावों के बारे में जागरूक होते हैं। ये नैतिक दुविधाएँ वास्तविक दुनिया की चुनौतियों को दर्शाती हैं, जिनका सामना कई महिलाएँ करती हैं, खास तौर पर व्यक्तिगत पूर्ति और देखभाल करने वाली भूमिकाओं के इर्द-गिर्द सामाजिक अपेक्षाओं के बीच संतुलन बनाने में। अध्ययन से पता चलता है कि लेखक इन दुविधाओं का इस्तेमाल पारंपरिक, पितृसत्तात्मक आख्यानो को चुनौती देने के लिए करते हैं, जो अक्सर महिलाओं के नैतिक निर्णयों को सरल या एक-आयामी के रूप में दर्शाते हैं।

चरित्र विकास और नैतिक विकास

चरित्र विकास नायक की नैतिक यात्रा को आकार देने में एक केंद्रीय विषय है। परिणाम संकेत देते हैं कि स्थिर चरित्रों को प्रस्तुत करने के बजाय, चयनित साहित्य अक्सर नायकों को जटिल नैतिक दुविधाओं

के माध्यम से विकसित होते हुए चित्रित करता है, जो आंतरिक और बाहरी दोनों तरह के विकास को दर्शाता है। यह विकास आमतौर पर नायकों की अपनी नैतिक रूपरेखाओं के बारे में बढ़ती जागरूकता और समाज द्वारा लगाए गए पारंपरिक नैतिक मानदंडों पर सवाल उठाने के तरीके के माध्यम से दर्शाया जाता है।

उदाहरण के लिए, इन कार्यों में महिला पात्र अक्सर न्याय, देखभाल और नैतिक जिम्मेदारी को समझने के तरीके में परिवर्तन से गुजरती हैं। शुरुआत में, कई नायक सामाजिक मानदंडों या पारिवारिक अपेक्षाओं का पालन करने के लिए संघर्ष करते हैं, लेकिन जैसे-जैसे कथाएँ आगे बढ़ती हैं, वे नैतिकता की अधिक सूक्ष्म समझ विकसित करना शुरू कर देते हैं जो उनके व्यक्तिगत अनुभवों से सूचित होती है। यह प्रगति नायक की बढ़ती नैतिक एजेंसी को उजागर करती है, जो उन्हें अपने विकसित होते मूल्यों के आधार पर निर्णय लेने की अनुमति देती है, भले ही ये विकल्प सामाजिक या सांस्कृतिक अपेक्षाओं के विपरीत हों।

इस नैतिक एजेंसी को अक्सर ऐसे तरीकों से दर्शाया जाता है जो पारंपरिक लिंग भूमिकाओं को चुनौती देते हैं। नायकों के नैतिक विकास को स्वायत्तता की बढ़ती भावना और अपने व्यक्तिगत विश्वासों को प्रतिबिंबित करने वाले निर्णय लेने के अपने अधिकार के दावे से चिह्नित किया जाता है, भले ही ये निर्णय पितृसत्तात्मक मानदंडों के विपरीत हों। यह एजेंसी नारीवादी चिंताओं को प्रदर्शित करने में महत्वपूर्ण है कि महिलाओं से सामाजिक ढांचे के भीतर नैतिक रूप से प्रदर्शन करने की अपेक्षा कैसे की जाती है जो अक्सर व्यक्तिगत स्वायत्तता पर सामूहिक या पारिवारिक कल्याण को प्राथमिकता देते हैं।

कथात्मक संरचना और नैतिक जटिलता

समकालीन महिला साहित्य की कथात्मक संरचनाएँ नैतिक जटिलता और अस्पष्टता की खोज में और योगदान देती हैं। इस अध्ययन में विश्लेषित कहानियाँ अक्सर गैर-रेखीय कथाएँ, कई दृष्टिकोण या खुले निष्कर्ष का उपयोग करती हैं, जो सभी नायकों द्वारा सामना की जाने वाली नैतिक अनिश्चितता को बढ़ाते हैं। ये कथात्मक तकनीकें नैतिक दुविधाओं की अधिक स्तरीय खोज की अनुमति देती हैं, जहाँ पाठक को पात्रों के साथ नैतिक चिंतन में संलग्न होने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। अध्ययन में पाया गया है कि इनमें से कई कथाएँ नायक के नैतिक संघर्षों के लिए निश्चित समाधान प्रस्तुत करने का विरोध करती हैं। इसके बजाय, वे कुछ नैतिक प्रश्नों को अनसुलझा छोड़ देते हैं, जिससे कई नैतिक संभावनाओं की व्याख्या करने की अनुमति मिलती है। यह कथात्मक दृष्टिकोण इस विचार को पुष्ट करता है कि नैतिक निर्णय कोई मायने नहीं रखते

नारीवादी नैतिक विषय: देखभाल नैतिकता, स्वायत्तता और अंतर्संबंध

अध्ययन से यह भी पता चलता है कि नारीवादी नैतिक सिद्धांत - विशेष रूप से देखभाल नैतिकता, स्वायत्तता और अंतर्संबंध - मुख्य पात्रों द्वारा सामना की जाने वाली नैतिक दुविधाओं में गहराई से अंतर्निहित हैं। विशेष रूप से देखभाल नैतिकता, महिला मुख्य पात्रों के नैतिक विकल्पों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जो अक्सर खुद को दूसरों की ज़रूरतों को अपनी इच्छाओं के विरुद्ध तौलते हुए पाती हैं। ये दुविधाएँ देखभाल के काम के कम मूल्यांकन और महिलाओं द्वारा अपनी स्वायत्तता से ज़्यादा दूसरों की ज़रूरतों को प्राथमिकता देने की अपेक्षा के बारे में नारीवादी चिंताओं को दर्शाती हैं।

इसके विपरीत, स्वायत्तता का विषय इन पारंपरिक देखभाल अपेक्षाओं को चुनौती देता है, ऐसे मुख्य पात्रों को चित्रित करके जो अपनी स्वतंत्रता और व्यक्तिगत मूल्यों को मुखर करने का प्रयास करते हैं, भले ही ऐसा करने में नैतिक रूप से अस्पष्ट या विवादास्पद निर्णय लेना शामिल हो। देखभाल और स्वायत्तता के बीच तनाव इन कार्यों में एक केंद्रीय नैतिक चिंता के रूप में उभरता है, जिसमें मुख्य पात्र अक्सर संबंधपरक दायित्वों को पूरा करने और व्यक्तिगत अखंडता बनाए रखने के बीच एक नाजुक संतुलन बनाते हैं।

इसके अलावा, अध्ययन समकालीन महिला मुख्य पात्रों की नैतिक दुविधाओं को समझने में अंतर्संबंध के महत्व पर प्रकाश डालता है। इन पात्रों द्वारा सामना की जाने वाली नैतिक चुनौतियाँ अक्सर जाति, वर्ग और यौन अभिविन्यास जैसे परस्पर जुड़े कारकों द्वारा आकार लेती हैं, जो उनके नैतिक निर्णय लेने को जटिल बनाती हैं। अपने आख्यानो में अंतर्संबंध को शामिल करके, लेखक महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली नैतिक चुनौतियों का अधिक समग्र चित्रण प्रस्तुत करने में सक्षम हैं, इस बात पर जोर देते हुए कि पहचान चिह्न नैतिक एजेंसी और नैतिक विकल्पों को कैसे प्रभावित करते हैं।

निष्कर्ष

समकालीन महिला साहित्य में नैतिक जटिलता और अस्पष्टता महिलाओं के जीवन की गहरी वास्तविकताओं को उजागर करती है। इस साहित्य में नायक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वह न केवल अपने व्यक्तिगत संघर्षों का सामना करती है, बल्कि सामाजिक और नैतिक दुविधाओं को भी परिभाषित करती है। नैतिक जटिलता का सामना करते हुए, महिला नायक अक्सर अपने निर्णयों में भ्रमित हो जाती हैं, जहाँ कोई भी विकल्प पूरी तरह से सही या गलत नहीं होता है। इस प्रकार, यह साहित्य दर्शाता है कि नैतिकता कभी स्थिर नहीं होती है; यह समाज, संस्कृति और व्यक्तिगत अनुभवों

के आधार पर बदलती रहती है। नायक के माध्यम से इस जटिलता को समझने से यह स्पष्ट होता है कि समाज में महिलाओं के लिए नैतिक निर्णयों की सीमा हमेशा धुंधली होती है। महिला नायक का संघर्ष और उसके निर्णय न केवल उसके जीवन की कहानी है, बल्कि यह समाज की नैतिकता और महिला पात्रों की स्थिति के बारे में महत्वपूर्ण सवाल भी उठाता है। इस अध्ययन के माध्यम से, यह समझने में मदद मिलती है कि समकालीन महिला साहित्य में नैतिक दुविधाओं का चित्रण समाज की बदलती नैतिकता को प्रतिबिंबित करने और महिलाओं की भूमिका को फिर से परिभाषित करने का एक शक्तिशाली तरीका है। महिला नायक अपने संघर्षों के माध्यम से समाज में एक नया नैतिक दृष्टिकोण निर्मित करती हैं, जो समाज में अधिक समानता और स्वतंत्रता की दिशा में भविष्य के आंदोलन की ओर इशारा करता है।

संदर्भ

1. बिलब्रो, जे. (2015)। लाहिड़ी की हॉथोर्नियन जड़ें: "हेमा और कौशिक" में कला और परंपरा। समालोचना: समसामयिक कथा साहित्य में अध्ययन, 54(4), 380-394।
2. अब्दुल्ला, एम., और मैथ्यू, आर. (2019)। मोर का समय. ईटीटी छाप. 3. किरपाल, वी. (2017)। भारती मुखर्जी की कनाडाई लघुकथाओं में प्रवासी अनुभव: एक भारतीय प्रतिक्रिया। उत्तर औपनिवेशिक साहित्य में अध्ययन, 100।
4. बाला, एस. (2020)। झुम्पा लाहिड़ी, प्रमुख कथाकार: विकृतियों के व्याख्याकार के लिए एक आलोचनात्मक प्रतिक्रिया।
5. बेट्स, एच.ई. (2018)। आधुनिक लघुकथा: एक आलोचनात्मक सर्वेक्षण। (कोई शीर्षक नहीं)।
6. मेहरिंग, एफ. (2015)। "मैं अमेरिकी हूँ!" अमेरिकी नागरिकता का रोमांच. ज़िट्सक्रिफ्ट फर एंग्लिस्टिक अंड अमेरिकनिस्टिक, 61(4), 355-371।
7. बर्कसन, आई.बी. (2017)। अमेरिकीकरण के सिद्धांत: एक आलोचनात्मक अध्ययन, यहूदी समूह के विशेष संदर्भ में (नंबर 109)। कोलम्बिया विश्वविद्यालय।
8. स्पिलर, आर.ई. (2016)। छवि; या, अमेरिकी सपने का क्या हुआ।
9. ब्रॉडफुट, बी. (2017)। दुःख के वर्ष, शर्म के वर्ष: द्वितीय विश्व युद्ध में जापानी कनाडाई लोगों की कहानी। (कोई शीर्षक नहीं)।
10. पॉवेल, जे. (2019)। उत्तर अमेरिकी आप्रवासन का विश्वकोश। इन्फोबेस प्रकाशन।
11. चारोन, एम. (2018)। दो दुनियाओं के बीच: कनाडाई आप्रवासन अनुभव।

12. ड्यूर, एस.ए. (2016)। संयुक्त राज्य अमेरिका के नागरिक अधिकार संघर्ष के संदर्भ में ग्रेट ब्रिटेन में अश्वेत राजनीतिक लामबंदी। कैलिफोर्निया स्टेट यूनिवर्सिटी, फ्रेस्नो।
13. क्रेसी, डी. (2017)। आगामी: सत्रहवीं शताब्दी में इंग्लैंड और न्यू इंग्लैंड के बीच प्रवासन और संचार। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
14. एटवुड, एम. (2019)। वसीयतनामा। नान ए टैलीसे।
15. मॉरिसन, टी. (2015)। भगवान बच्चे की मदद करें. बढ़िया शराब।
16. लाहिड़ी, जे. (2018) द नेमसेक. ह्यूटन मिफ्लिन।
17. स्ट्राउट, ई. (2016)। मेरा नाम लुसी बार्टन है। आकस्मिक घर।
18. स्मिथ, जेड (2016)। स्विंग का समय. पेंगुइन प्रेस।
19. रॉबिन्सन, एम. (2017). गिलियड. फर्रर, स्ट्रॉस और गिरौक्स।